कृषि नवाचार
ISSN: 3048-6092
https://www.krishinavachar.in
खण्ड 03 भाग 03 जून, 2026

नेपियर घास: एक बार करें बुवाई और वर्षों तक कटाई

वर्तिका शुक्ला[2], करुणेश दूबे[1], विनय कुमार पाण्डेय[1], उन्नति पांडेय[2] और सोनी सिंह[3*]
[1]सहायक प्राध्यापक, श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज, गोण्डा, उत्तर प्रदेश
[2]छात्रा बी. एससी (ऑनर्स) एग्रीकल्चर, श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज, गोण्डा, उत्तर प्रदेश
[3]सहायक प्राध्यापक, आईटीएम यूनिवर्सिटी ग्वालियर ग्वालियर, मध्य प्रदेश, भारत
***E-mail: sonis6285@gmail.com**

भारत एक कृषि प्रधान देश है जहाँ बढ़ती जनसंख्या और सीमित कृषि भूमि के कारण केवल फसल उत्पादन पर निर्भर रहना किसानों के लिए पर्याप्त नहीं है। ऐसी स्थिति में पशुपालन आधारित होना चाहिए। नेपियर घास एक महत्वपूर्ण घास फसल है जो अधिक मात्रा में हरा चारा देती है। यह घास तेजी से बढ़ती है और वर्ष में कई बार कटाई कर सकते हैं।

परिचय

नेपियर घास बहुवर्षीय हरी चारा फसल है। इसे हाथी घास (एलिफेंट ग्रास) भी कहा जाता है। यह घास ऊँची भूमि तथा अधिक उपज देने वाली है। नेपियर घास में अत्यधिक प्रोटीन और पोषक तत्व होते हैं। इसलिए यह गाय, भैंस, बकरी आदि पशुओं के लिए पर्याप्त है। नेपियर घास की फसल वर्ष भर होती है, वर्ष भर में कई बार फसल की कटाई कर सकते हैं। पशुपालकों को आर्थिक लाभ प्राप्त होता है। नेपियर घास गाय, भैंस, बकरी के दुग्ध उत्पादन को बढ़ाता है। इसका उत्पादन अन्य कई घास/चारा फसलों की तुलना में अधिक होता है। नेपियर घास की खेती करने से पशुओं को वर्ष भर हरे चारे की उपलब्धता रहती है। यह घास पशुओं के स्वास्थ्य एवं उत्पादन में सुधार होता है। नेपियर घास गर्म एवं आर्द्र जलवायु में अच्छी रहती है।

नेपियर घास का इतिहास एवं महत्व

नेपियर घास की उत्पत्ति यूगांडा तथा पूर्वी अफ्रीका और अन्य देशों में मानी जाती है। इसकी उपयोगिता को देखते हुए इसे एशिया एवं अन्य देशों में उगाया जाने लगा। नेपियर घास की खेती इंडिया में बड़े पैमाने में की जाती है। आज नेपियर घास का महत्व लगातार बढ़ रहा है क्योंकि पशुओं को वर्ष भर चारे की उपलब्धता कराना एक बहुत बड़ी आवश्यकता है। इससे किसानों को बाजार से महंगा चारा खरीदने की आवश्यकता कम पड़ती है। यह भूमि संरक्षण में सहायक है तथा मिट्टी के कटाव को कम करने में मदद करती है।

वैज्ञानिक नाम एवं प्रमुख विशेषताएँ

नेपियर घास का वैज्ञानिक नाम सेंचरस पर्प्यूरोस है। पहले इसे पेनिसेटम पर्परियम के नाम से जाना जाता था, लेकिन वर्तमान वनस्पति वर्गीकरण में इसका नाम सेंचरस पर्प्यूरोस स्वीकार किया गया। यह बहुवर्षीय घास है अर्थात् एक बार लगाने से कई वर्षों तक लगातार हरा चारा प्राप्त किया जा सकता है। इसकी ऊँचाई 2 से 4 मीटर तक होती है। इसका तना मोटा, मजबूत और गाँठदार होता है जबकि पत्तियाँ लम्बी, चौड़ी तथा गहरे हरे रंग की होती हैं। नेपियर घास की जड़ें गहरी और मजबूत होती हैं। 45-60 दिनों के बाद कटाई करना शुरू कर देते हैं। इसकी पत्तियाँ मुलायम और पौष्टिक होती हैं।

भूमि की तैयारी एवं बुवाई की विधि

नेपियर घास की फसल करने के लिए भूमि की तैयारी करना अत्यन्त आवश्यक है। यदि भूमि अच्छी तरह से तैयार किए जाए, तो पौधे अच्छी बढ़ते हैं और हरे चारे की अधिक मात्रा में उपज देते हैं। सबसे पहले भूमि को 2-3 बार अच्छी तरह जुताई करनी चाहिए। प्रत्येक जुताई के बाद पाटा लगाकर खेत को समतल बनाया जाता है और अंतिम जुताई के समय 20-25 टन प्रति हेक्टेयर सड़ी हुई गोबर की खाद मिलाना चाहिए। नेपियर घास सामान्यतः तने की कलम (स्टेम कटिंग) या जड़युक्त स्लिप (रूटेड स्लिप्स) द्वारा किया जाता है। बुवाई के लिए स्वस्थ एवं रोगमुक्त पौधों का चयन करना

कृषि नवाचार
ISSN: 3048-6092
https://www.krishinavachar.in
खण्ड 03 भाग 03 जून, 2026

चाहिए। रोपण का सही समय फरवरी-मार्च तथा जून-जुलाई में किया जाता है। रोपण के बाद हल्की सिंचाई करनी है।

उन्नत किस्में

नेपियर घास की अनेक उन्नत किस्में विकसित की गई हैं, जो अधिक हरा चारा उत्पादन, बेहतर पोषण गुणवत्ता तथा विभिन्न जलवायु परिस्थितियों के प्रति अनुकूलता के लिए जानी जाती हैं। इन किस्मों का चयन क्षेत्र, जलवायु तथा पशुओं की चारा आवश्यकता के अनुसार किया जाता है। उन्नत किस्मों के उपयोग से किसानों को वर्षभर पर्याप्त मात्रा में गुणवत्तायुक्त हरा चारा प्राप्त होता है। नेपियर घास की प्रमुख उन्नत किस्मों में को-1, को-2, को-3, को-4, को-5, धन-6 (धारवाड़ हाइब्रिड नेपियर-6), आईजीएफआरआई हाइब्रिड नेपियर, पीबीएन-83, पीबीएन-233, अपबन-1 (आंध्र प्रदेश बाजरा नेपियर-1), एनबी-21 (नेपियर बाजरा हाइब्रिड-21), यशवंत हाइब्रिड नेपियर, केकेएम-1, सुगना तथा जायंट नेपियर (एलिफेंट ग्रास) शामिल हैं। ये किस्में उच्च उत्पादन क्षमता, तीव्र वृद्धि तथा उत्कृष्ट चारा गुणवत्ता के लिए प्रसिद्ध हैं। ये नेपियर घास की प्रमुख उन्नत एवं संकर (हाइब्रिड) किस्में हैं, जिनका उपयोग भारत के विभिन्न राज्यों में चारा उत्पादन के लिए किया जाता है। यह वो किस्म है जो ज्यादा उत्पादन देती है नेपियर घास का।

रोग एवं कीट प्रबंधन, सिंचाई, खरपतवार: नेपियर घास की फसल के लिए अधिक उत्पादन तथा पौधों को स्वस्थ बनाए रखने के लिए सिंचाई, खरपतवार, रोग एवं कीट प्रबंधन अपनाना चाहिए। नेपियर घास की नियमित सिंचाई करनी चाहिए। मौसम के अनुसार समय-समय पर पानी दिया जाता है। वर्षा के बाद उगने वाले खरपतवार फसल के पोषक तत्व और पानी के साथ प्रतिस्पर्धा करते हैं। इसलिए उन्हें समय-समय पर निराई-गुड़ाई करनी चाहिए। नेपियर घास की फसल में रोग एवं कीटों का प्रभाव कम होता है, फिर भी पत्ती धब्बा रोग और तना छेदक कीट से बचाव करने के लिए नियमित निगरानी करनी चाहिए। उचित प्रबंधन से नेपियर घास की उपज एवं गुणवत्ता में वृद्धि होती है।

नेपियर घास का प्रबंधन

नेपियर घास का प्रबंधन वह प्रक्रिया है जिसमें बुवाई से लेकर कटाई तक की प्रक्रिया शामिल होती है और अधिक मात्रा में हरा चारा प्राप्त होता है। सफल प्रबंधन के लिए उपयुक्त समय पर सिंचाई करना, आवश्यकतानुसार उचित जैविक एवं रासायनिक उर्वरकों का संतुलित उपयोग करना तथा खेत को खरपतवार से मुक्त रखना चाहिए। प्रत्येक कटाई के बाद सिंचाई और खाद देना चाहिए, जिससे फसल अच्छी तैयार हो जाती है।

नेपियर घास का आर्थिक लाभ

नेपियर घास पशुपालकों के लिए लाभकारी चारा फसल है। नेपियर घास का उत्पादन सामान्य चारा फसलों की तुलना में अधिक होती है। इसमें कम क्षेत्रफल में अधिक मात्रा में हरा चारा प्राप्त होता है। एक बार रोपण करने के बाद यह कई वर्षों तक उत्पादन देती रहती है। बार-बार बुवाई पर खर्च कम होता है।

नेपियर घास पशुओं को पौष्टिक चारा उपलब्ध कराती है। इससे उनकी वृद्धि, स्वास्थ्य तथा दुग्ध उत्पादन में सुधार होता है। इससे दूध उत्पादन बढ़ने पर पशुपालकों की आय में वृद्धि होती है। वर्ष भर हरे चारे की उपलब्धता बनी रहती है और सूखे चारे एवं बाजार से चारा खरीदने पर कम खर्चा होता है। इसकी खेती में भूमि एवं खरपतवार की लागत अपेक्षाकृत कम होती है जबकि उत्पादन अधिक मिलता है। नेपियर घास कम लागत में अधिक उत्पादन देने वाली फसल है। पशुपालन व्यवसाय के लिए अधिक लाभदायक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसकी खेती में जोखिम कम तथा लाभ अपेक्षाकृत अधिक होती है। यह घास पशुओं के दुग्ध उत्पादन में बढ़ोत्तरी देती है।

नेपियर घास उत्पादन को प्रभावित करने वाले कारक

नेपियर घास की उपज अनेक कृषि एवं पर्यावरणीय कारकों पर निर्भर करती है। प्रमुख कारक निम्नलिखित हैं-

जलवायु: गर्म और आर्द्र जलवायु घाम के लिए उपयुक्त होती है। ज्यादा ठंड या पाला इनकी वृद्धि को प्रभावित करते है।

भूमि का प्रकार: अच्छी जल निकास वाली मृदा नेपियर के लिए उपयुक्त मानी जाती है जलभराव और अधिक क्षारीय या अम्लीय मृदा उत्पादन को प्रभापित करती है।

सिचाई: नेवियर को कम मात्रा में जल की आवश्यकता होती है पर समय-समय पर जल दिया जाता है जिससे उत्पादन प्राप्त होता रहता है अधिक जल भराव उत्पादन को प्रभावित करता है।

खरपतवार नियंत्रण: नेपियर में अधिक खरपतवार पोषक तत्व एवं नमी के लिए प्रतिस्पर्धा करते है जिससे इसका उत्पादन गिर जाता है। इसलिए समय पर खरपतवार नियंत्रित करते रहते है।

रोग एवं कीट प्रबंधन: नेपियर में रोग एवं कीट समय पर नियंत्रित नही होते है तो उत्पादन कम प्राप्त होता है। समय पर कीट एवं रोग को नियंत्रित करते रहना चाहिय।

रोपण का समय: नेपियार को फरवरी- मार्च या जून-जुलाई में रोपित किया जाता है यदि समय से रोपित नहीं किया जाता है तो उत्पादन में कमी दिखती है।

कटाई प्रबंधन: नेपियर की पहली कटाई 45-60 दिन में की जाती है तथा बाद की कटाई 30-45 दिन के अंतराल पर की जाती है यदि समय पर कटाई नहीं होती है तो उत्पादन कम प्राप्त होता है।

निष्कर्ष

नेपियर घास बहुवर्षीय एवं उच्च उपज देने वाली चारा फसल है। यह पशुओं को पौष्टिक हरा चारा उपलब्ध कराती है। नेपियर घास पशुओं के स्वास्थ्य तथा दुग्ध उत्पादन में वृद्धि करती है। नेपियर घास में कम लागत में अधिक उत्पादन तथा आर्थिक लाभ देती है। आने वाले समय इसकी खेती की बढ़ावा देकर न केवल पशुपालन को सशक्त बनाया जा सकता है, बल्कि किसानों की आय बढ़ाने और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करती है।

●●●